Dr. Harisingh Gour Vishwavidhyalaya

2020 - 21

Topic → Study of handloom business in Sagar

Name → Nikhil Soni

Roll No. → Y1928016

Class → M.Com IV Sem.

Submitted by

Nikhil Soni

Submitted to

Dr. D.K. Nema Sir

विषय सूची

क्र.	सूची	पेज नं.
1.	प्रस्तावना	2.
2.	महत्व	4.
3.	क्रियाविधि	6.
4.	योजनाएं	9.
5.	हथकरघा क्षेत्र के लिए पुनरुद्धार	15.
6.	हथकरघा और मिल के कपड़ो मे अंतर	31
7.	घोषणाएँ व चुनौतियाँ	32
8.	एक नजर में परियोजना	38.
9.	संदर्भ	39.

INTRODUCTION

वस्त्र भारतीय परम्परा में एक अभिन्न अंग रखते हैं और यही कारण है कि यहाँ वस्त्र संबंधित कई व्यापार प्रचलित हैं। पूरे भारत भर में विभिन्न प्रकार के वस्त्र पाये जाते हैं जैसे कलकत्ता, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र व अन्य जनजातियों के वस्त्र। वस्त्रों का निर्माण भारत में शुरुआती दौर से ही हथकरघों पर होते आ रहा है, पर अब यहाँ पर पावरलूम पर भी यह कार्य होने लगा है। मेरठ, उत्तर भारत में वस्त्र निर्माण में एक प्रमुख भूमिका का निर्वहन करता है, तथा यहाँ पर कपड़े का निर्माण का बड़ी संख्या में होता है। हथकरघा वस्त्र और हथकरघा बुनकर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परम्परा का एक अभिन्न अंग हैं। इसके अलावा सकल घरेलू उत्पाद और निर्यात में एक महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ-साथ मनुष्य की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए यह उद्योग शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है। भारत में कृषि के बाद हथकरघा सबसे बड़े रोजगार प्रदाताओं में से एक है। यह क्षेत्र 43.31 लाख लोगों को रोजगार प्रदान करता है जिसमें से करीब 23.77 लाख व्यक्ति हथकरघा से जुड़े हैं जिसमें से 10 प्रतिशत अनुसूचित जाति, 18 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति और 45 प्रतिशत अन्य पिछड़े वर्गों से हैं। वर्ष 2013-14 में हथकरघा क्षेत्र में 7116 मिलियन वर्ग मीटर (अप्रैल - सितंबर 2013)